भाकृअनुप-केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपूर

कपास की खेती के लए ३१ अक्टुबर- ०६ नवंबर, २०१६ साप्ताहिक सलाह

"सलाहकार संबं धत राज्यों के राज्य कृ ष व कृ ष वश्व वद्यालयों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर कया जाता है"

साप्ताहिक सलाह

	वास्त वक वर्षा (ममी)							मौसम वभाग व्दारा संभा वत वर्षा (ममी)						
	अक्टुबर							नवंबर						
दिनांक	20-26	26	27	28	29	30	31	1	2	3	4	5	6	सलाह
पंजाब														पंजाब, हरियाणा, तथा रा जस्थान, तीनों राज्यों में कपास की चुनाई का कारी तीव्र गति से चल रहा है | जै सड, सफ़ेद मक्खी तथा तथा फूलकीट(थ्रप्स) की संख्या नगण्य है | कसानों को साफ-सुथरी कपास चुनने की प्र क्रया अपनाने की सलाह दी जाती है | कपास बदरंग करने वाले कीटों की संख्या फसल में बहुतायत में है इस लए कपास सावधानी के साथ चुनें।
भटिंडा	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
फरोजपुर	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
मुकतसर	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
मानसा	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
हरियाणा														
सरसा	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
हिसार	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
फ़तेहाबाद	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
राजस्थान														
हनुमानगढ़	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
श्रीगंगानगर	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
बांसवाड़ा	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
उड़ीसा														फसल गूलर वकास तथा परिपक्वावस्था में है | रस चूषक कीटों तथा पत्ती लपेटक का प्रकोप देखा जा रहा है , जो आ र्थक हानि स्तर से
कोरापुट	0	0	0	0	0	0	0	0	0	2	0	1	15	

कालाहांडी	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	2	21	कम है	राज्य के कुछ भागों में जीवाणु पत्ती शीर्णन तथा घुसर चूर्णी फफूँद का प्रकोप देखा गया है	भवानीपटना जिले के 03 जिलों का सर्वेक्षण कया गया , जिनमें से दामूदरपुर , करलाकोट तथा सहजेत गावों के 4 से 5 स्थलों पर सर्फ जै सड की संख्या आ र्थक हानि स्तर से अ धक दर्ज सी गई	गूलर पकने की फसल की इस अवस्था में जै सड के नुकसान को उपज पर प्रभाव नहीं पड़ने से नजरंदाज कया जा सकता है	
बोलांगीर	0	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	0	25	
गुजरात														सूरत जिले में फसल पुष्पन गूलर वकास अवस्था में है	निराई का कार्य कया गया है	कुछ स्थलों पर जै सड की संख्या आ र्थक हानि स्तर से अ धक है	नाशीकीटों के लए सर्वे कए गए 08 गावों में से करमड, उमरा, बोजादरा, उमरपाड़ा, देदियापाड़ा गावों के प्रत्येक के एक स्थल पर गूलर की गुलाबी सूँडी आ र्थक हानि स्तर से अ धक रिकार्ड की गई| जूनागढ़ जिले के 02 गावों में सर्वे कया गया| इन जलनसर तथा जामनवद गावों के प्रत्येक के एक स्थान पर जै सड आ र्थक हानि स्तर से अ धक पाया गया| एक बचावात्मक उपाय के रूप में कुछ चुने हुए कीटनाशकों का छिड़काव गुलाबी सूँडी के वरुद्ध कसानों द्वारा करने की सलाह दी जाती है| कसान गुलाबी सूँडी के फीरोमोन ट्रैप 08 पतंग प्रति ट्रैप प्रति रात्री लगातार 3 रात्री पकड़ में आने के आ र्थक हानि स्तर पर पतंगों की संख्या पहुँचने पर गुलाबी सूँडी की रोकथाम के उपाय करें	कीटनाशकों का अ ववेकपूर्ण इस्तेमाल करने से नाशीकीटों के पुनरुद्भव की समस्या बढ़ेगी|
अमरेली	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
भावनगर	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
जामनगर	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
राजकोट	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
भरूच	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
सबरकांठा	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
सुरेन्द्रनगर	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
अहमदाबाद	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
वडोदरा	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
पाटन	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
मेहसाना	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
मध्य प्रदेश														फसल गूलर निर्माण अवस्था में है तथा अगेती बुआई की गई फसल गूलर प्रस्फुटन अवस्था में है| कुछ खेतों में कपास चुनाई का कार्य प्रारंभ हो चुका है| पछेती बुआई की गई फसल में रस चूषक कीटों का प्रकोप देखा गया है| कुछ क्षेत्रों में पत्ती धब्बा तथा एन्थ्रेक्नोज रोग देखा गया है|
खरगोन	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
धार	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
खंडवा	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	

महाराष्ट्र														अगेती बुआई की गई फसल में गूलर प्रस्फुटन अवस्था में है | बीटी कपास में गूलर की सूँडी तथा सफ़ेद मक्खी का प्रकोप देखा गया है जिनकी रोकथाम के सफारिश कए गए उपाय कए जा सकते हैं| बीटी तथा बीटी रहित कपास में *एल्टरनेरिया* पत्ती धब्बा दर्ज कया गया है| कुछ बीटी संकरों में परिपक्वावस्था में लाल पत्ती रोग देखा गया है | अकोला तथा राहुरी में 03 गांवों का सर्वे कया गया , जिनमें से कोरागांव(अकोला), साडे, तथा गोतुम्बे आखाडा(राहुरी) गावों के प्रत्येक के एक स्थल पर जै सड आ र्थक हानि स्तर से उपर दर्ज कीया गया| नांदेड के 05 गावों(पंपलगाव, फूलवाल, केरोडा, वरतला, तथा तुप्पा) में सर्वे कया गया जीनमें सफ़ेद मक्खी का प्रकोप 1-2 स्थानों पर, जै सड 1-2 स्थानों पर, मलीबग 1 से 2 स्थानों पर, गुलाबी सूँडी का 2-4 स्थानों पर , अमेरिकन सूँडी 2-3 स्थानों पर , *एस. लटूरा* 2-3 स्थानों पर तथा चत्तीदार सूँडी 2 से 4 स्थानों पर प्रकोप आ र्थक हानि स्तर से अ धक रिकार्ड कया गया | इस वेब पृष्ठ पर दिये गए कपास स्वास्थय परामर्शी में सफारिश कए गए नयंत्रण उपायों को अपनाएं| गुलाबी सूँडी के लए फीरोमोन ट्रैप की स्थापना करके 08 पतंग/रात्री/ट्रैप सतत 3 रात्रियों में पकड़ में आने पर रोकथाम के उपाय करें|
धुले	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
नांदूरबार	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
जलगांव	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
अहमदनगर	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
औरंगाबाद	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
जालना	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
बीड़	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
नांदेड़	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
परभणी	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
हिंगोली	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
बुलढाना	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
अकोला	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
वा सम	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
अमरावती	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
यवतमाल	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
वर्धा	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
नागपुर	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
चन्द्रपुर	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
तेलंगाना														कुछ गावों में गुलाबी सूँडी का प्रकोप आ र्थक हानि से अ धक पाया गया है| अदिलाबाद से मली रिपोर्ट में कुछ क्षेत्रों में निगरानी के लए फरोमोन ट्रैप @4-5/हे के संख्या में फसल में स्था पत करने की सलाह दी जाती है|
आदिलाबाद	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
वारंगल	0	0	0	0	0	10	3	3	0	0	0	0	0	
खम्मन	0	0	0	0	0	2	2	2	7	1	0	0	0	
कारिंगर	0	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	0	
नालगोंडा	0	0	0	0	0	3	2	2	3	0	0	0	0	
महबूबनगर	0	0	0	0	0	0	0	0	4	0	0	0	0	

आंध्रप्रदेश														फसल गूलर निर्माण अवस्था में प्रवेश कर चुकी है| अ धकांश जिलों में फूलों तथा गुलाबवत् फूलों में गुलाबी सूँडी का प्रकोप देखा जा रहा है जो आ र्थक हानि स्तर से कम है	गुलाबी सूँडी के प्रकोप के स्तर की निगरानी के लए खेत में सामुदायिक तौर पर तुरंत फीरोमोन ट्रैप स्था पत करें| गुलाबवत् फूलों तथा हरे गूलरों के नमूने निय मत लेकर उनकी जांच करते रहें	गुलाबवत् फूल, झड़ी हुई क लयों , सूखे फूलों तथा पकने से पूर्व झड़े हुए लघु गूलरों को निय मत रूप से एकत्र कर नष्ट करते रहें	ऐसा करने से प्रारं भक अवस्था में ही इस कीट का दमन होगा| वर्तमान मौसमी परिस्थिति में प र्णल फफूँद पत्ती रोग तथा पत्ती धब्बा तथा जीवाणु पत्ती शीर्णन देखे जा सकते हैं	सफारिश कए गए बचावात्मक उपाय कए जा सकते हैं	गुंतूर जिले के 10 गावों का श्वेक्षण क्या गया **|** इन दस गावों (निदूमुक्कला **,** पोन्नेकाल्लू**,** पेडा परि म , मेडीकों डरु**,** श्रीपुरम, लेमाल्ले , लंगापुरम , प्रात्ति पडू**,** यादलपाडु, तिम्मा पुरम) के प्रत्येक के एक स्थान पीआर जै सड आ र्थक हानि स्तर से अ धक पाया गया तथा फूलकीट(थ्रप्स) को श्रीपुरम के एक स्थान आ र्थक हानि स्तर से ऊपर दर्ज कया गया**|**
गुन्टूर	0	0	0	0	0	0	1	1	8	3	4	3	0	
प्रकासम	0	0	0	0	0	0	4	4	5	0	3	0	0	
कर्नाटक														फसल गूलर वकास अवस्था में तथा कुछ स्थाओं पर गूलर प्रस्फुटन अवस्था में है	धारवाड़ तथा हवेरी जिलों के कपास उत्पादक क्षेत्रों में वगत सप्ताह वर्षा दर्ज नहीं की गई	अ धक तापमान तथा बढ़ती
धारवाड़	0	0	0	0	0	0	0	0	5	4	4	0	0	
हवेरी	0	0	0	0	0	0	0	0	0	15	2	0	0	

मैसूर	0	0	0	0	0	0	15	15	1	5	0	3	0	मरौदा नमी की कमी के कारण अ धकांश कपास उत्पादक जिलों में फसल के जलती पकाने तथा गूलर प्रस्फुटन देखा जा रहा है | कपास उत्पादक क्षेत्रों में मरिड , मज , तथा गूलाबी सूँडी की रोकथाम के उपाय कए गए हैं | मेग्नी शयम सल्फेट तथा प्लानो फक्स के साथ पोषकतत्वों का फसल पर छिड़काव कया गया है | हवेरी धारवाड़ तथा बेलगाम जिलों मे मरिड, मज, तथा गूलाबी सूँडी का प्रकोप देखा गया है|बीटी कपास के खेतों में गुलाबी सूँडी के पतंगों को बड़े पैमाने पर पकड़ने के लए फसल में फीरोमोन ट्रैप स्था पत करें | पहली चुनाई की कपास को पृथक भण्डारित करें अथवा अच्छा बाजार भाव लेने के लए अलग से बेचें| कसानों को सलाह दी जाती है की कपास में नमी रहने के कारण प्रात:10 बजे के बाद ही चुनना प्रारंभ करें अन्यथा कपास की गुणता खाराब होगी | धारवाड़ जिले के 10 गावों में सर्वेक्षण कया गया| इनमें से अगादी, केनगापुर, क्यालाकोंडा गावों के 1-2 स्थानों पर जै सड आ र्थक हानि स्तर से अ धक रिकार्ड कया गया ; थ्रप्स क्यालाकोंडा के एक स्थान पर तथा गुलाबी सूँडी अगादी , केनगापुर , क्यालाकोंडा, वरदाहल्ली, तथा गुत्तल गांवों के 1-3 स्थानों पर आ र्थक हानि स्तर से अ धक दर्ज कए गए | कली मेगॅट, केनगापुर, तथा पाले गांवों के 1 से 2 स्थानों पर तथा मरिड बाग हवेरी तथा शीगोंय गांवों के प्रत्येक के एक स्थान पर आ र्थक हानि स्तर से अ धक रिकार्ड कए गए|
ता मलनाडु														फसल गूलर वकास अवस्था में प्रवेश कर चुकी है | फसल 72 स79 दिनों की है| छोटे 'हो' से अंत:सस्य क्रयाएँ करने तथा पौधों पर म ी चढ़ाने के लए सफारिश की जाती है | चौड़ी पत्ती वाले खरप तवारों के रोकथाम के लए पायरीथायोबैक सो डयम(10%) एससी@ 62.5 ग्रा/हे की दर से अंकुरण पश्चात अनुप्रयोग तथा घास कुल के खरप तवारों के प्रबंधन के लए क्वीजालोफोप इथाइल(5%) @50 ग्रा/हे की दर से
पेरंबलुर	7.8	0	0	0	0	26	18	18	0	0	0	0	0	
सलेम	6.7	0	0	0	0	2	0	0	0	0	0	0	0	
त्रिची	32	0	0	0	0	13	11	11	0	5	0	0	0	
वरडुनगर	12	0	1	0	0	0	1	1	0	22	5	5	5	

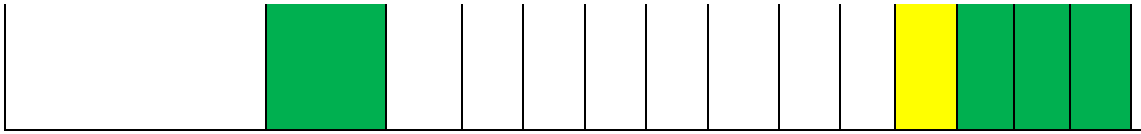

अनुप्रयोग की सफारिश की जाती है| रोगों का प्रकोप नहीं है|

आदर्श वर्षा					
वर्षा म.मी.	**<5**	**5-20**	**21-50**	**50-80**	**>80**

साप्ताहिक सलाहकार संयोजक टीम:

डा. के.आर. क्रांति, डा. ए. एच. प्रकाश, डा. संध्या क्रांति, डा. डी. मोंगा, डा. ब्लेज़ डी-सूज़ा, डा. एस. बी. संह, डा. संगनधूपे, डा.एम.वी. वेणुगोपालन, डा. इसाबेला अग्रवाल, डा. एम.सबेस, डा. वश्लेष नगरारे, डा. ऋ ष कुमार, डा. एन अनुराधा नराला, डा. दीपक नगराले, श्रीमति संगीता औरंगाबादकर एवं कु. स चता एलेकर

हिन्दी संसकरण: डॉ. उल्हास नंदनकर, मुख्य तकनीकी अ धकारी एवं प्रभारी, हिन्दी अनुभाग तथा प्रभारी, वरिष्ठ प्रक्षेत्र अधीक्षक, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)